भारत में महिला आन्दोलन (Women's Movements in India)

1. प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिलाओं को लंबे समय तक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से वंचित रखा गया। पितृसत्ता, बाल विवाह, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, अशिक्षा और संपत्ति के अधिकारों से वंचना ने उनकी स्थिति को कमजोर किया। इसी असमानता के विरुद्ध समय-समय पर महिलाओं और सुधारकों ने आन्दोलन चलाए, जिन्हें हम **महिला आन्दोलन** कहते हैं।

---

2. महिला आन्दोलनों के प्रमुख चरण

(क) औपनिवेशिक काल (19वीं – प्रारम्भिक 20वीं सदी)

- **सुधारवादी आन्दोलन** – राजा राममोहन राय (सती प्रथा उन्मूलन), ईश्वरचन्द्र विद्यासागर (विधवा विवाह) आदि।
- **आर्य समाज और प्रार्थना समाज** – महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक सुधार की माँग।
- **एनी बेसेन्ट और सरोजिनी नायडू** – महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और स्वराज की माँग।
- **महिला संगठन** – *भारतीय महिला परिषद (1904)*, *नेशनल काउंसिल ऑफ वीमेन इन इंडिया (1925)*।

(ख) स्वतंत्रता संग्राम काल

- गाँधीजी ने महिलाओं को *सत्याग्रह* और *असहयोग आन्दोलन* में व्यापक रूप से जोड़ा।
- सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, कमला देवी चट्टोपाध्याय जैसे नेताओं की भूमिका।
- महिलाएँ राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ-साथ समानता और स्वतंत्रता की भी माँग करने लगीं।

(ग) स्वतंत्रता के बाद का काल (1950–1970)

- संविधान ने महिलाओं को समान अधिकार दिया (अनुच्छेद 14, 15, 16)।
- *हिन्दू कोड बिल (1955–56)* – विवाह, उत्तराधिकार और संपत्ति में सुधार।
- लेकिन व्यवहार में असमानता बनी रही, जिससे नये आन्दोलन की ज़रूरत हुई।

(घ) नई महिला आन्दोलन (1970 के बाद)

- **चिपको आन्दोलन (1973, उत्तराखंड)** – पर्यावरण और आजीविका की रक्षा में महिलाओं की अग्रणी भूमिका।
- **समान वेतन आन्दोलन** – "Equal Pay for Equal Work" की माँग।
- **एंटी-डाउरी आन्दोलन (1970s–80s)** – दहेज उत्पीड़न और दहेज हत्या के खिलाफ आन्दोलन।
- **Mathura Rape Case (1972)** – पुलिस हिरासत में बलात्कार का मामला, जिसने *1983 में IPC की धारा 376* में संशोधन करवाया।
- **सेल्फ-एम्प्लॉयड वीमेंस एसोसिएशन (SEWA, 1972, एला भट्ट)** – असंगठित क्षेत्र की महिलाओं के लिए आर्थिक सशक्तिकरण का आन्दोलन।
- **महिला आरक्षण आन्दोलन (1990s–2000s)** – संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण की माँग।

(ङ) समकालीन आन्दोलन (2000 के बाद)

- **निर्भया आन्दोलन (2012)** – दिल्ली गैंगरेप के बाद देशव्यापी आन्दोलन, जिसके बाद *कठोर कानून (POCSO, Criminal Law Amendment 2013)* बने।
- **#MeToo Movement (2017–18)** – यौन उत्पीड़न के खिलाफ वैश्विक आन्दोलन, भारत में भी व्यापक प्रभाव।
- **त्रिपल तलाक विरोधी आन्दोलन** – मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के लिए।
- **महिला किसान आन्दोलन (2020–21)** – तीन कृषि कानूनों के विरोध में बड़ी संख्या में महिलाओं की भागीदारी।

---

3. महिला आन्दोलनों की विशेषताएँ

1. **समानता की माँग** – शिक्षा, रोजगार, राजनीति और संपत्ति में बराबरी।
2. **पितृसत्ता के विरुद्ध संघर्ष** – पारिवारिक और सामाजिक ढाँचों में बदलाव।
3. **कानूनी सुधार** – विवाह, तलाक, दहेज, बलात्कार और कार्यस्थल पर उत्पीड़न से संबंधित कानून।

4. **सामाजिक न्याय और पहचान** – दलित महिलाएँ, आदिवासी महिलाएँ और मुस्लिम महिलाओं के विशेष मुद्दे।
5. **वैश्विक और स्थानीय जुड़ाव** – अन्तरराष्ट्रीय नारीवाद और भारतीय परिप्रेक्ष्य का सम्मिलन।

---

4. समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोण

- **सिमोन द बोउवार (Simone de Beauvoir)** – महिलाओं की स्थिति "The Second Sex" के रूप में; सामाजिक संरचना उन्हें 'दूसरे' के रूप में परिभाषित करती है।
- **बेट्टी फ्रिडन (Betty Friedan)** – आधुनिक नारीवादी आन्दोलन की प्रेरणा; *The Feminine Mystique*।
- **गेल ओमवेड्ट (Gail Omvedt)** – भारतीय महिला आन्दोलनों को दलित और किसान आन्दोलनों से जोड़कर देखती हैं।
- **कमला भसीन** – भारतीय नारीवाद की प्रखर आवाज़; पितृसत्ता और लैंगिक असमानता पर आलोचना।
- **ए.आर. देसाई** – महिला आन्दोलनों को वर्ग संघर्ष और सामाजिक ढांचे से जोड़कर देखते हैं।

---

5. निष्कर्ष

महिला आन्दोलन भारत में केवल महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई नहीं है, बल्कि यह **समानता, न्याय और लोकतंत्र की गहराई** का प्रतीक है।
औपनिवेशिक काल से लेकर आज तक महिला आन्दोलनों ने समाज में जागरूकता, कानूनी सुधार और नयी चेतना का निर्माण किया है।